



करुणा और दया में अपने को भी करें शामिल

भारत की परंपरा में बच्चा जब पढ़-लिखकर योग्य हो जाता है, तब वो अपने पिता के व्यवसाय को सम्भालता है। एक तरह से मानो कि वो पिता का स्थान ग्रहण कर लेता है और पिता की जो धरोहर है उसको आगे बढ़ाने का मुख्य कारक बनता है। ठीक इसी तरह हम सभी भी हमारे प्राणप्रिय परमात्मा के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए निमित्त हैं। करीब आठ-नौ दशक पूर्व आरंभ किये गये परमात्मा के विश्व परिवर्तन के कार्य को हमने उनके सानिध्य में रहकर सीखा है, समझा है और उस कार्य को सम्पन्न करने की योग्यता भी प्राप्त की है। हम भाग्यशाली हैं कि इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए वे सदा हमारे साथ हैं और सदा समयांतर हमें गाइड भी कर रहे हैं। यह बड़ी ही खुशी की बात है हमारे लिए। आज चारों ओर ऐसा माहौल है जहाँ मुसीबत, मुश्किलातों के पहाड़ हैं, विघ्नों का अंबार है, किंतु परमात्मा हमारे साथ होने के कारण वो हमारे उमंग-उत्साह को कभी कम होने नहीं देता। हम भी एक बल, एक भरोसे के सहारे कार्य की सम्पन्नता की ओर अग्रसर हैं।

आज विश्व के हर कोने में उथल-पुथल, विनाश, लड़ाई एवं दुःख के पहाड़ मनुष्य के सामने चुनौतियों के रूप में हैं। ऐसे में हम सबकी जिम्मेवारी व उत्तरदायित्व है कि हम सब दुखियों का, निःसहाय का सहारा बनें। इसी उद्देश्य को सामने रखते हुए ब्रह्माकुमारी संस्थान की वार्षिक मीटिंग में इस वर्ष को 'करुणा एवं दया का

वर्ष' के रूप में मनाने का निश्चय किया गया है। इस अम्ब्रेला थीम के अंतर्गत देश तथा विदेश के हरेक मनुष्य आत्माओं को सुख-शांति की अंचली देना है। आज चारों ओर हर कोई लेने की आश से खड़ा है क्योंकि किसी का तो इस महामारी में जीवन ही अस्त-व्यस्त हो गया, किसी ने अपनों को खोया तो निःसहाय हो गया। मंदी के दौर ने मनुष्य की बुद्धि का ही दिवाला निकाल दिया। वो समझ नहीं पा रहा कि क्या करे, कैसे करे, कैसे जीये! इस महामारी से उबरने की कोशिश कर ही रहे थे कि एक ओर वैश्विक लड़ाई ने मनुष्य की कमर ही तोड़ दी।

अब हम करुणा और दया वर्ष के सम्बंध में समझने की कोशिश करते हैं कि इस भगीरथ कार्य को कौन कर सकता है व कैसे कर सकता है। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए कौन योग्य है, क्या पात्रता होनी चाहिए, इसके बारे में समझते हैं। दुःखी, अशांति और असंतुलन का मुख्य कारण है मनुष्य का भटकता मन। अब जबकि हमें परमात्मा के कार्य की जिम्मेवारी पूर्ण करनी है, तब हमें मुख्यतः चार बातें अपने जीवन से पूर्णतः समाप्त कर देनी ही होंगी। अगर ये चार बातें होंगी तो हम किसी पर भी करुणा व दया नहीं कर पायेंगे। वो चार बातें हैं- अलबेलापन, ईर्ष्या, घृणा और नफरत। सबसे पहले हम अलबेलापन क्या है उसको सूक्ष्मता से समझने की कोशिश करते हैं। साधना के पथ पर चलते हुए अपने आप में झांककर हमें इसे जड़-मूल से समाप्त कर देना होगा। अलबेलापन हमारे पुरुषार्थ में सबसे बड़ा बाधक है। जैसे कि हम एक-दूसरे को देखते हैं, उसमें कोई कमी है, उसको ग्रहण कर लेते हैं। कई बार तो हम आश्चर्य से देखते हैं कि ये इतने साल से ज्ञान में चल रहे हैं, प्रभु-पालना में पल रहे हैं, फिर भी ये क्रोध करते हैं! तो हमने तो अभी ही ज्ञान मार्ग अपनाया है, हम कौन-सी खेत की मूली हैं! जब अभी तक वे भी नहीं कर पाये, तो हम भी कभी न कभी कर लेंगे। समय रहते हम भी सम्पन्न हो जायेंगे। लेकिन परमात्मा ने हमें पहले ही बता दिया है 'सी फादर ऑनली, न कि ब्रदर-सिस्टर'। देखो, अगर हम इस आज्ञा का पालन नहीं करते तो हम प्रभु प्यार से वंचित हो जाते हैं और हम दूसरों को मदद करने व देने में असमर्थ हो जाते हैं।

इसी तरह अगर हमारे में ईर्ष्या है तो भी हम किसी को देने में समर्थ नहीं होंगे। क्योंकि ईर्ष्या के बारे में आप सभी जानते ही हैं कि ईर्ष्या वो चीज़ है जो प्रभु परिवार में भी कोई उनसे आगे बढ़ता है तो उसे देख नहीं सकते। और यही सोच उनके जीवन को दीमक की तरह खोखला कर देती है। इसी तरह घृणा वाला मनुष्य कैसे किसी पर रहम कर सकेगा! घृणा व नफरत वो चीज़ है जो यदि किसी ने किसी मनुष्य के बारे में सुना है कि फलाने व्यक्ति का चाल-चरित्र ठीक नहीं है, धोखेबाज है, दुःखदायी है, झगड़ालू है, तो उसे देखते ही उसके मन में घृणा पैदा होती है, नफरत पैदा होती है। तो जहाँ घृणा व नफरत मन में है, तो वो भला शुभ-भावना, शुभ-कामना दूसरों के प्रति कैसे कर पायेगा! तो ये चारों चीज़ें यदि अभी भी हमारे जीवन में हैं तो 'परमात्म-सेवा योजना- करुणा और दया' को सम्पन्न करने में हम कैसे सहयोगी बन सकेंगे! क्योंकि समय बहुत नाजुक भी है और बहुत थोड़ा भी। ऐसे वक्त पर हमें स्वयं को इन चीज़ों से बचाना भी है और परमात्मा द्वारा प्राप्त सर्वशक्तियों एवं सर्व खजानों से सम्पन्न भी बनना है। बिना सम्पन्नता के हम देने के अधिकारी नहीं हो सकेंगे। तो आइये, हम अपने आप को साक्षी होकर देखें, चेक करें, तीव्रता से स्वयं को चेक करें और परमात्मा की आशाओं और उम्मीदों को पूरा करें।



डॉ. गंगाधर

हमें सिर्फ कर्मकर्ता नहीं... कर्मयोगी बनना है

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

कई आत्मायें कहती हैं कि जितना समय हम याद में रहना चाहते हैं उतना समय याद उठरती नहीं है, तो बाबा कहते हैं दो बातें अपने मन में जरूर याद करो कि बाबा ने क्या से क्या बनाया है और क्या-क्या दिया। तो प्राप्ति कराने वाला कभी भूलता नहीं है। कल क्या थे और आज क्या बन गये? इसकी बहुत लम्बी लिस्ट बनाके अपने सामने रखो, तो याद कभी भूल ही नहीं सकती। प्राप्ति को याद करने से खुशी होती रहेगी। सतयुग में भी इतनी प्राप्ति नहीं होंगी जितनी इस समय संगम पर हमें बाबा से होती है। सम्बन्ध भी मिलता है, सम्पत्ति भी मिलती है। इस समय के महत्त्व को जानो और इस समय रूपी खजाने को विधिपूर्वक कार्य में लगाओ तो जमा का खाता बढ़ेगा। ऐसे ही हम सर्व शक्तियों के मास्टर सर्वशक्तिक्रान हैं तो शक्तियों को जैसे और जब भी यूज करना हो वैसे कर सको तो उसका महत्त्व और बढ़ता है। जिस शक्ति को हम ऑर्डर करते हैं वो शक्ति हाज़िर हो जाये इसको कहा जाता है मास्टर सर्वशक्तिक्रान। अगर कोई चीज़ समय पर काम में नहीं आती है तो वो चीज़ होते भी क्या फायदा?

तो चेक करो कि श्रेष्ठ संकल्प द्वारा व्यर्थ समाप्त हो जाता है? क्योंकि व्यर्थ बहुत फास्ट नुकसान करता है अगर व्यर्थ चलता रहा तो मैं मास्टर सर्वशक्तिक्रान कैसे हूँ? परिवर्तन की

शक्ति मेरी समय पर यूज ही नहीं होती है तो मैं मास्टर कैसे हूँ! तो यह अभ्यास करना चाहिए। ऐसे नहीं सिर्फ वो सोच ही चलती रहे कि होना तो चाहिए, हुआ नहीं, एक दिन लग गया, दो दिन लग गया। और बाबा ने तो इशारा दिया है कि कोई भी समय किसी का भी अचानक कुछ भी हो सकता है। तो अचानक शब्द को ध्यान में रखते हुए एवररेडी बनके तैयार रहो। फिर तो बस, बाबा ने बुलाया चला गया, ऐसे हो जायेगा। ऐसे एवररेडी हम सबको बाबा बनाना चाहता है। तो हमसे जो बाबा चाहता है वही तो हम बच्चों को करना है। इसी एक धारणा से ही तो मम्मा नम्बरवन में चली गयी।

हमें सिर्फ कर्मकर्ता ही नहीं बनना है, कर्मयोगी बनना है। दुनिया में कर्मकर्ता तो बहुत हैं। कर्मयोगी बनके कर्म करना माना कर्म को एकाग्रता से करना। एकाग्रता माना योग। योग में रहकर के कर्म करने से हर कर्म श्रेष्ठ होगा, सफल होगा। योगी जीवन की आदत भी पक्की हो जायेगी। तो मन की एकाग्रता से बाबा को याद करते रहें और हाथों से कर्म करते रहें तो अन्तिम एक सेकण्ड के पेपर में पास हो सकेंगे। बाप समान बन जायेंगे। तो दिल से कहे बाबा, तो चेहरा एकदम खिल जाये, ऐसी अवस्था अपनी बनानी है। तो बाबा को ऐसा खुश किस्मत वाला खुशनुमः चेहरा दिखायेंगे ना!

हमें कभी भी अन्दर से रेस्टलेस नहीं होना है

राजयोगिनी दादी जानकी जी

अभी हमें अन्दर से डीप पुरुषार्थ करके अपने संकल्पों में शांति लानी है, प्रेम सम्पन्न बनना है। ज्ञान कहता है अन्दर की खुशी हो, शक्ति हो। अपने ही संकल्पों की गहराई में जाओ तो युद्ध का संस्कार समाप्त हो जायेगा। कोई कारण भी बने तो भी विजयी बनों, योद्धे नहीं बनों। अब छोटी-छोटी बातों को बड़ा बनाकर लड़ते-झगड़ते नहीं रहो। संकल्प को शुद्ध और शांत रखने की आदत डालो।

ब्राह्मण हूँ, स्वदर्शन चक्रधारी हूँ, तो संकल्प धीरे-धीरे चलेंगे, जरूरी काम के संकल्प आयेंगे। नहीं तो शांत रहेंगे। अन्दर के पुरुषार्थ में शांति रहे तो संकल्पों को नियंत्रित रख सकते हैं। बोलते, करते सबको अच्छा-अच्छा कहके अन्दर शांत रहना है। अन्दर की शांति हमारे रूट में (जड़ों में) चली जाये, मेरे में जरा भी अशांति न हो।

संकल्पों में अगर शांति, शुद्धि होगी तो वो वायब्रेशन पहुंचेंगे। कलह वाले नहीं होंगे, मिलनसार होंगे। मुस्कराहट भी ऐसी होगी, जो खुश हो जायेंगे। अगर अन्दर चला गया तो फल अच्छा निकलेगा, जिसको कहा जाता है सफलता। संकल्प में, वाणी में, चाहे कर्म में, सम्बन्ध में सफलता होगी। ऐसे अन्दर ही अन्दर अपने संकल्प की उत्पत्ति शांति वाली हो, स्नेह वाली हो। कुछ काम वाले संकल्प हो, अच्छी वृत्ति से अच्छा वायब्रेशन

फैलायें। बाबा का एक बोल सदा याद रहता है सी फादर, फॉलो फादर। यह आँखें बाबा को देखने के लिए हैं। अगर आँखें इधर-उधर होंगी तो फॉलो नहीं कर सकेंगे। मुझे अन्दर लगान है, इच्छा है सिर्फ फॉलो फादर करने की। योग शिवबाबा से लगाना है लेकिन फॉलो ब्रह्मा बाबा को करना है। यह बाबा कैसे कर्म कर रहा है, स्थापना का इतना बड़ा कार्य है, फिर भी उन्हें कोई जवाबदारियां थकाती नहीं हैं। हमारी जिम्मेवारी है सिर्फ अपनी स्थिति अच्छी रखने की।

हर बात में बाबा को देखो, बाबा पत्र लिख रहा है तो भी कहेगा बाबा लिख रहा है। बाबा भण्डारे में जायेगा तो भी कहेगा बाबा के भण्डारे में जा रहा हूँ। तो सदा ही बाबा को याद रहा कि यह शिवबाबा का यज्ञ है। कभी मेरा नहीं कहा। मिस्टेक तब होती है जब मेरा कहते हैं। मेरापन भारी करता है। मैं पन का अभिमान थका देता है। अभी हमें कभी भी अन्दर से रेस्टलेस नहीं होना है।

बाबा बच्चों की कोई भी कमी न सुनता है, न देखता है, सिर्फ अपना काम करता है। हम सुनते देखते हैं तो भविष्य थोड़े ही याद रहेगा! बाबा बच्चों को भी याद दिलाता है बच्चे विनाश के पहले सतयुगी राजधानी बनानी है। यह पुरानी दुनिया खत्म हुई पड़ी है, सिर्फ आप बच्चे तैयार हो जाओ।

बाबा की आकर्षण तब हो जब बाहर की बातों से अन्तर्मुख हों...



राजयोगिनी दादी एकाशमणि जी

सेकण्ड में इस देह की स्मृति से परे जा सकते हो? क्योंकि हम राजयोगियों का जो अपने इस योग का अनुभव है- वो है यहाँ बैठे-बैठे सेकण्ड में अपने वतन में उड़कर पहुंच जायें। जब संदेशियां उड़कर जा सकती, वह तो ट्रान्स है। हम बुद्धिबल से अपने फरिश्तों की अव्यक्त दुनिया में बाबा से मिलन मनाने उड़ जाएं। इस शरीर में अशरीरी न्यारे बन, उसी फरिश्तों की दुनिया में, लाइट की दुनिया में अव्यक्त बाबा के सामने मिलन मनायें, तो इस जैसा अतीन्द्रिय सुख कोई नहीं है। यह दिल के अनुभव का गीत वही गा सकते जो इसकी प्रैक्टिस करते और बराबर उस परम आनन्द का अनुभव करते हैं।

गोपियों का जो अतीन्द्रिय सुख गाया हुआ है, वह प्रैक्टिकल में हम राजयोगियों के सुख का ही गायन है। जितना इस देह से न्यारे बन आत्मा निश्चय कर बाबा से मिलन मनाते हैं तो इस मिलन से बाबा सर्वशक्तियां भर देता, जिसको ही तपस्या कहा जाता है। यही राजयोग है। इसका निरन्तर अभ्यास चाहिए, भट्टी चाहिए।

हमने देखा है जिनको इस याद का, योग का अनुभव है, उनकी बुद्धि सहज ही दुनिया की सर्व



ज्ञान हमारी पढ़ाई है, जिस पढ़ाई को बुद्धि में धारण करना है और जितनी ज्ञान की गहरी प्वाइन्ट्स बुद्धि में धारण होंगी उतना ही बुद्धि फिर दिल से बाबा के शुक्रिया का गीत गायेगी।



बातों से हट जाती है और ऐसी प्रैक्टिस करने वालों की दृष्टि में शक्ति रहती है क्योंकि वृत्ति में एक बाबा ही रहता है। स्वयं को बाबा के साथ कम्बाइंड देखते। जब तक इस योग की अनुभूति गहरी नहीं करेंगे तब तक शक्तियां नहीं मिलेंगी। जो भी पॉवर्स हैं वो इस योग साधना से मिलती हैं। इस साधना से माया पर विजयी बन सकते हैं।

ज्ञान हमारी पढ़ाई है, जिस पढ़ाई को बुद्धि में धारण करना है और जितनी ज्ञान की गहरी प्वाइन्ट्स बुद्धि में धारण होंगी उतना ही बुद्धि फिर दिल से बाबा के शुक्रिया का गीत गायेगी। और जितना याद की यात्रा करेंगे उतना अपने को वरदानों से भरपूर अनुभव करेंगे क्योंकि यह याद ही हमें वरदाता बाप से वरदान दिलाती, इसी से समीप हो जाते हैं। फिर दिल से गीत निकलता बाबा आपको पाकर हमने तो जहान पा लिया। ऐसी लगन वाले ही सच्चे आशिक बन माशुक की याद में रहते हैं।

निराकारी दुनिया तो परमधाम है लेकिन अव्यक्त

वतन, सूक्ष्मवतन यह हमारे संगम की विशेषता है। उसका हरेक को अनुभव चाहिए, जहाँ से बाबा हमें मिलने आते हैं। तो इसके लिए जितनी-जितनी बुद्धि बाहर की बातों से अन्तर्मुख होगी, उतना ही बाबा की आकर्षण रहेगी। सचमुच हमें भगवान की आकर्षण हो रही है- यह अनुभव होना चाहिए। जैसे कई बार बाबा कहते कि बांधेलियों को बाबा से मिलने की आकर्षण होती कि कहीं छुट्टी मिले तो हम बाबा से, भगवान से मिलने के लिए भागूँ। जैसे दुःख में सिमरण सब करें वैसे बांधेलियों पर बन्धन हैं तो वह जास्ती याद करती हैं, आप लोग छुट्टे ले हैं तो मस्त रहते हैं। अच्छा है, मौज है, मस्त रहते यह भले अच्छा है लेकिन लगन एक अलग चीज़ है। वह ऐसी लगन होती जो रात को नींद उड़ जाती और मन कहता बाबा के पास जाके बाबा से रूहरिहान करते रहें। यही है रूहानियत की यात्रा। तो सदा ऐसी रूहानी यात्रा की रूचि रख बाबा से मिलन की अनुभूति करनी और करानी है।